Name of the College - A.P.S.M College Barauni
Name - Dr. Rajesh Kumar Suman
Class → B.A Part - 2 [H]
Paper → III
Date → 8.4.2021
Unit → 04

Name of the topic → Trade cycle

⇒ व्यापार - चक्र की अवस्थाएँ। [Phases of trade cycle]

→ भिन्न-भिन्न अर्थशास्त्रियों ने व्यापार - चक्र के मार्ग को विभिन्न अवस्थाओं में बाँटा है तथा इन अवस्थाओं के विभिन्न नाम भी दिये हैं। उनमें से मुख्य निम्नलिखित हैं।

[A] K.E Boulding के अनुसार :-
(i) अवसाद [Depression] (ii) पुनरुद्धार [Recovery]
(iii) पूर्ण रोजगार [Full Employment]
(iv) अभिवृद्धि [Boom] (v) अवरोध [Recession]

(B) May wood Simon के अनुसार :-
(i) समृद्धि [Prosperity] (ii) गिरावट [Decline]
(iii) अवसाद [Depression] (iv) पुनरुद्धार [Recovery]

(C) J.A Estey के अनुसार :
(i) विस्तार [Expansion] (ii) अवरोध [Recession]
(iii) संकुचन [Contraction] (iv) पुनर्जीवन [Revival]

(D) Albert Meyers :- के अनुसार :-
(i) पुनरुद्धार [Recovery] (ii) समृद्धि [Prosperity]
(iii) अवरोध [Recession] (iv) अवसाद [Depression]

⇒ एक अर्थव्यवस्था ने व्यापारिक- व्यतिक्रम की गति के निम्न प्रकार बताये हैं :
शान्ति की अवस्था फिर सुधार → बढ़ता हुआ व्यापारिक विश्वास → समृद्धि उत्तेजना → अधिव्यवस्था → टेंशन → दबाव → निश्चेष्टता → अतिपीड़ा निष्प्राण शांति में पुनः अन्त।

Scanned with CamScanner

⇒ प्रायः प्रत्येक व्यापार-चक्र पाँच अवस्थाएँ देखने को मिलती हैं।

(1) अवसाद अथवा मन्दी :- व्यापार-चक्र की पहली अवस्था अवसाद की है। इस अवधि में अर्थव्यवस्था में उत्पादन तथा रोजगार के स्तर में गिरावट का गम्भीर रोग विद्यमान हो जाता है। विनियोग की कमी के कारण अर्थव्यवस्था में श्रमिक तथा अन्य साधन बेकार हो जाते हैं तथा मजदूरी दरों में अत्यधिक कमी हो जाती है। यद्यपि उपभोग वस्तुओं की कीमतों में भारी कमी आ जाने से उनकी वास्तविक मजदूरी में वृद्धि हो जाती है परन्तु ऊँची वास्तविक मजदूरी के ही सामने निर्धन बेरोजगार व्यक्तियों की एक भीड़-सी होती है जो ऊँची मजदूरी के प्रभाव को कम कर देती है क्योंकि जो रोजगार में लगे भी हुए हैं, उनके सामने सदैव यह भय बना रहता है कि कहीं वे भी रोजगार से अलग न कर दिये जायें। उत्पादन के साधनों की अपेक्षा वस्तु का मूल्य अधिक गिरने के कारण व्यवसायियों को हानि होती है। औद्योगिक वस्तुओं के मुकाबले कच्चे माल की कीमतें और भी अधिक कम होती हैं अतः कृषकों तथा कच्चे माल के उत्पादकों की आर्थिक स्थिति व्यापारियों व पक्के माल के उत्पादकों की तुलना में अधिक खराब होती है। इस प्रकार मन्दी काल में सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था से उत्पादन तथा वितरण प्रणालियाँ अस्त-व्यस्त हो जाती हैं।

शेष आगे